जनवरी–फरवरी 2021

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

मोरंगे

बाल पत्रिका

इस बार

सुनीता,
उम्र–8 वर्ष,
समूह–संगम

खेल खिलाड़ी

5 क्रिकेट का मैच

उड़ान

7 जीतू मामा / मेरा स्कूल

8 दादा की काकड़ी / सर्कस

9 हाथी की भूख

10 लालची रानी

12 दो तितलियाँ

13 एक होनहार बालक

ज्ञान विज्ञान

14 गलगल तौरिया

जोड़–तोड़

15 लक्ष्मी का गणित

17 घाटे की खेती

कलाकारी

18 अपना काम

बात लै चीत ले

21 तालियाँ

22 जंगल में आग

23 डरपोक बाघ

25 माथापच्ची / हीहीही–ठीठीठी

26 कुछ हमने बढ़ायी, कुछ तुम बढ़ाओ

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : सुरेश चंद **वितरण :** लोकेश राठौर
आवरण चित्र : **ज्योति कुमार**, उम्र 10 वर्ष, समूह–सितारा और **कृष्णा बैरवा** उम्र–11 वर्ष, समूह–हरियाली
वर्ष 12 अंक 127–128

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
शुभम गर्ग
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

परिचय

कृष्णा, कक्षा–3, उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर–सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम–1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव–जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे

बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन–सहन, खान–पान, आजीविका, संस्कृति, रीति–रिवाज, बोली–भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खोखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्ता शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम – 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष–2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाषन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

खेल खिलाड़ी

क्रिकेट का मैच

दीपिका मीना, उम्र–12 वर्ष, समूह–सितारा

हमारे गाँव कटार में लोगो को क्रिकेट खेलना बहुत पसंद था। इस कारण वहाँ एक क्रिकेट का मैदान भी बना दिया था। पर मैदान के आस–पास कांटे बहुत थे। इस कारण वहाँ गेंद खोने का डर रहता था। जिसके बावजूद भी क्रिकेट खेला जाता था।

एक दिन वहाँ एक मेच होना था। सर्दियों का समय था। इसलिए घाँसों पर ओस का पानी आ जाता था। जिससे गेंदे गीली हो जाती थी। आज का मैच शुरू होने ही वाला था। सभी लोग सूरज निकलने की आशा में बैठे सोच रहे थे कि सूरज अब निकले–अब निकले। आधे घंटे के इन्तजार के बाद सूरज की किरणें घाँस पर पड़ी और ओस का पानी सूखने लगा। दोनों टीमें मैदान में उतरी जो खंडेवला और कटार गाँव से थी। टोस खण्डेवला की टीम ने जीता। उन्होंने टोस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया।

ओपनिंग में बल्लेबाजी करने के लिए पिंटू और रितेश उतरे। खण्डेवला की तरफ से गेंदबाजी करने मोहन सिंह उतरे जो बहुत ही खतरनाक गेंदबाज थे। इनके नाम 100 विकिट थे। 5.3 ओवर तक कटार का स्कोर 40 रन पर पहुँच चुका था। मगर 6 ओवर में 50 रन का आंकड़ा पूरा किया और फिर 2 ओवर बाद रितेश ने अपना अर्द्ध शतक पूरा किया। 10 वें ओवर में टीम को दूसरा झटका लगा। यह

बहुत बड़ा विकेट गिरा था जो बनवारी का था। इसलिए कटार टीम में मायूसी छा गई। मगर आने वाला खिलाड़ी था जयसिंह। 5 ओवर बाद रितेश का शतक पूरा हुआ और शतक पूरा करते ही रितेश 102 रन बनाकर आऊट हो गया। फिर 5वें विकेट के लिए खेलने आए बलराम और जयसिंह ने धुआंधार पारी खेल कर 100 रन की साझेदारी की। अब कटार का स्कोर 270/3 के नुकसान पर हो चुका था। खण्डेवला को जीत के लिए 271 रन का बड़ा स्कोर दिया गया।

खण्डेवला के लिए ओपनिंग में रामसिंह और रतन खेलने आये। कटार की तरफ से गेंदबाजी करने आये सोनू। इस के नाम से भी 96 विकट थे। सोनू के पास 100 विकेट पूरा करने का मौका था। इसको सच करने के लिए तीसरे ओवर में सोनू ने रतन का विकेट गिरा कर अपनी सुरूआत की। 5 ओवर के बाद खण्डेवला टीम का स्कोर 50 रन हो चुके थे। खण्डेवला की शुरूआत अच्छी थी पर उसको अभी भी 221 रन का विशाल स्कोर छूना था। इसके लिए रामसिंह ने 10 ओवर में 100 रन पूरे किये। तभी एक शॉट लेने के चक्कर में रामसिंह अपना विकेट खो बैठा। राम. सिंह के बाद रन बनाने की गति को कटार के गेंदबाजों ने रोक सा दिया पर संधर्ष जारी रहा।

मैच आखिरी ओवर में आ गया। खडेवला को 1 ओवर में 19 रन चाहिए थे। इधर सोनू को 100 विकिट पूरा करने के लिए एक विकेट की जरूरत थी। सोनू के 99 विकेट हो चुके थे। आखिरी ओवर की पहली चार गेंदों पर 11 रन बनाकर खण्डेवला टीम ने मैच में रोमांच भर दिया। अब 2 गेंदों में 8 रन की जरूरत थी और बॉल सोनू के हाथ में। सामने थे बल्लेबाज मोनू 5वी गेंद पर मोनू ने छक्का लगाकर तहलका मचा दिया। मैच खण्डेवला के पक्ष में झुक चुका था। अब देखना था कि सोनू और मोनू में कौन सफल होता है।

मोनू गेंद पर ध्यान दे रहा था और दूसरी तरफ सोनू तेज तर्रार गेंद के साथ दौड़ा। मोनू के मन में था कि चौका तो नहीं दे सकता हूँ क्योंकि सारे खिलाड़ी बाउण्ड्री पर खडे हैं। सोनू ने गेंद खिलाई और मोनू ने जोर से छक्का मारने की कोशिश की और गेंद हवाई मार्ग से मैदान के पार जा रही थी। तभी विष्णु उछला और गेंद पकड़ ली। परन्तु गेंद के साथ–साथ विष्णु भी बाउण्ड्री के पार जाने लगा। तभी विष्णु ने उसके पास खडे खिलाड़ी जितेन्द्र को गेंद फेकी और जितेन्द्र ने गेंद पकड़ ली। खुशी और उत्साह से भरा जितेन्द्र भाग कर सोनू के पास गया और सोनू से लिपट गया। सोनू की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। सोनू को मैन ऑफ द मैच चुना गया। कटार और खण्डेवला के खिलाड़ियों ने बहुत अच्छा खेल खेला।

जयसिंह मीना, कक्षा–8, समूह–हरियाली

उड़ान

आकाश गुर्जर, उम्र–10 वर्ष, समूह–सितारा

जीतू मामा

जीतू मामा आयेगा
लाल टमाटर लायेगा
मम्मी सब्जी बनायेगी
पापा सब्जी खायेगा
मोनू स्कूल जायेगा
गुडिया मौसी नाचेगी
बंदर ढोल बजायेगा।

बुद्धि प्रकाश गुर्जर, कक्षा–3,
उदय पाठशाला गिरिराजपुरा

अंकित मीना,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–संगम

मेरा स्कूल

मैदान के अन्दर
खेलें सारे बंदर
बंदर हैं वे इतने अच्छे
और नहीं है, वो हैं बच्चे
बच्चों की यह बस्ती
शिक्षा मिले इनको सस्ती
तीन कमरे पक्के
चार टपरिया कच्ची
बच्चे हैं मन के सच्चे

किसी काम में नहीं हैं कच्चे
छोटे हैं पर काम बड़े हैं
इनकी नहीं कोई होड़
यह दुनिया को देते छोड़
बदमाशी का तोड़े रिकॉर्ड
तुम भी देखो ऐसे बच्चे
देखके तुम भी खाओ झटके
नजर तुम्हारी हम पर अटके
हम तो हैं भई दुनिया से हटके

शीतल बैरवा, उम्र–10 वर्ष, समूह–सूरज

दादा की काकड़ी

आज दादा आयेगा।
अरंड काकड़ी लायेगा।
काकड़ी में निकले बीज।
काकड़ी को खा लिया।
बीजों को हमने फेंक दिया।
बीज में से पौधा निकला।
पौधा बढ़ा होकर पेड़ बना।
पेड़ में आये चार फल।
चारों फल खा लिये
बड़े मजे उड़ा लिये।

पवन गुर्जर
समूह–सागर,
उदय पाठशाला गिरिराजपुरा

सर्कस

गाड़ी आई–गाड़ी आई।
सर्कस की गाड़ी आई।
सबको खेल खिलाती आई।
सबको नाच नचाती आई।
सबको बुलाती आई।
सबको सुलाती आई।
शादी आई–शादी आई।
घर को सजाती आई।
हर घर से बराती लाई।
सबको जिमाती आई।
झमकूड़ी लाडी संग में लाई।

आरती बाई
उम्र–9 वर्ष,
उदय पाठशाला गिरिराजपुरा

दिलखुश बैरवा,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–हरियाली

हाथी की भूख

खुशबू मीना,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–सितारा

एक बार एक जंगल था। उस जंगल एक हाथी रहता था। एक दिन हाथी बाहर घूमने गया। वो चलता–चलता जंगल के बाहर निकल आया। उसे बड़े जोरों की भूख लगने लगी। तभी उसे एक झौपड़ी दिखाई दी। हाथी उस झौपड़ी के पास गया। उसमें एक बुढ़िया रहती थी। वह बहुत गरीब थी। हाथी ने बुढ़िया से कुछ खाने को मांगा। बुढ़िया उसे पीछे बाड़े में ले गई। वहाँ बहुत सारे केले के पेड़ थे और उनमें बहुत केले आ रहे थे। हाथी ने बहुत सारे केले खाये तो उसका पेट भर गया। बुढ़िया के घर में पानी नहीं था तो हाथी पास की एक नदी पर गया और पानी पिया। वापस आते समय वह अपनी सूंड में पानी भर लाया। बुढ़िया के बड़े–बड़े बर्तनों में पानी भरा और फिर वहाँ से चला गया।

सावन समूह के बच्चे, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

अनुष्का सैनी,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–रिमझिम

लालची रानी

एक बार की बात है। एक गाँव था। उस गाँव का नाम श्यामपुर था। उस गाँव में एक औरत रहती थी। उस औरत का नाम रानी था। वह औरत बहुत ही लालची थी। उसके दो बेटी थी। बड़ी बेटी का नाम राधा था और छोटी बेटी का नाम टीना था। वे दोनों बहने रोज स्कूल पढ़ने जाती थी। छोटी बेटी घर का सारा काम करती थी जबकि बड़ी बेटी कोई काम नहीं करती थी।

उस औरत ने दो भैंस भी पाल रखी थी। सुबह–सुबह उसकी छोटी बेटी दूध बेचने जाती थी। उसकी बेटी जब दूध बेचने जाती थी तो वह पूरे गाँव में दूध बेचती थी। जब वह दूध बेचकर वापस आती थी तो वह थक जाती थी। वह थोड़ा आराम करना चाहती थी। पर उसकी माँ उसको आराम करने नहीं देती थी। जैसे ही आराम करने जाती उसकी माँ उसे दूसरा काम बता देती थी। वो उसकी माँ से बोल नहीं सकती थी कि माँ मुझे आराम करना है। क्योंकि उसकी माँ के मन में

उसके लिए बिलकुल भी प्रेमभाव नहीं था। वह उसकी माँ से बहुत डरती थी। जब वो दूध बेचने जाती थी तो उसकी माँ उससे कहती थी कि तुम दूध में ज्यादा पानी डाल लो। पर वह ऐसा नहीं करती थी तो उसकी माँ उससे जबरदस्ती दूध में पानी डलवा दिया करती थी। वह चाहती थी कि पैसे ज्यादा आयें और उसकी बेटी रोजाना उसके कहने पर काम किया करे।

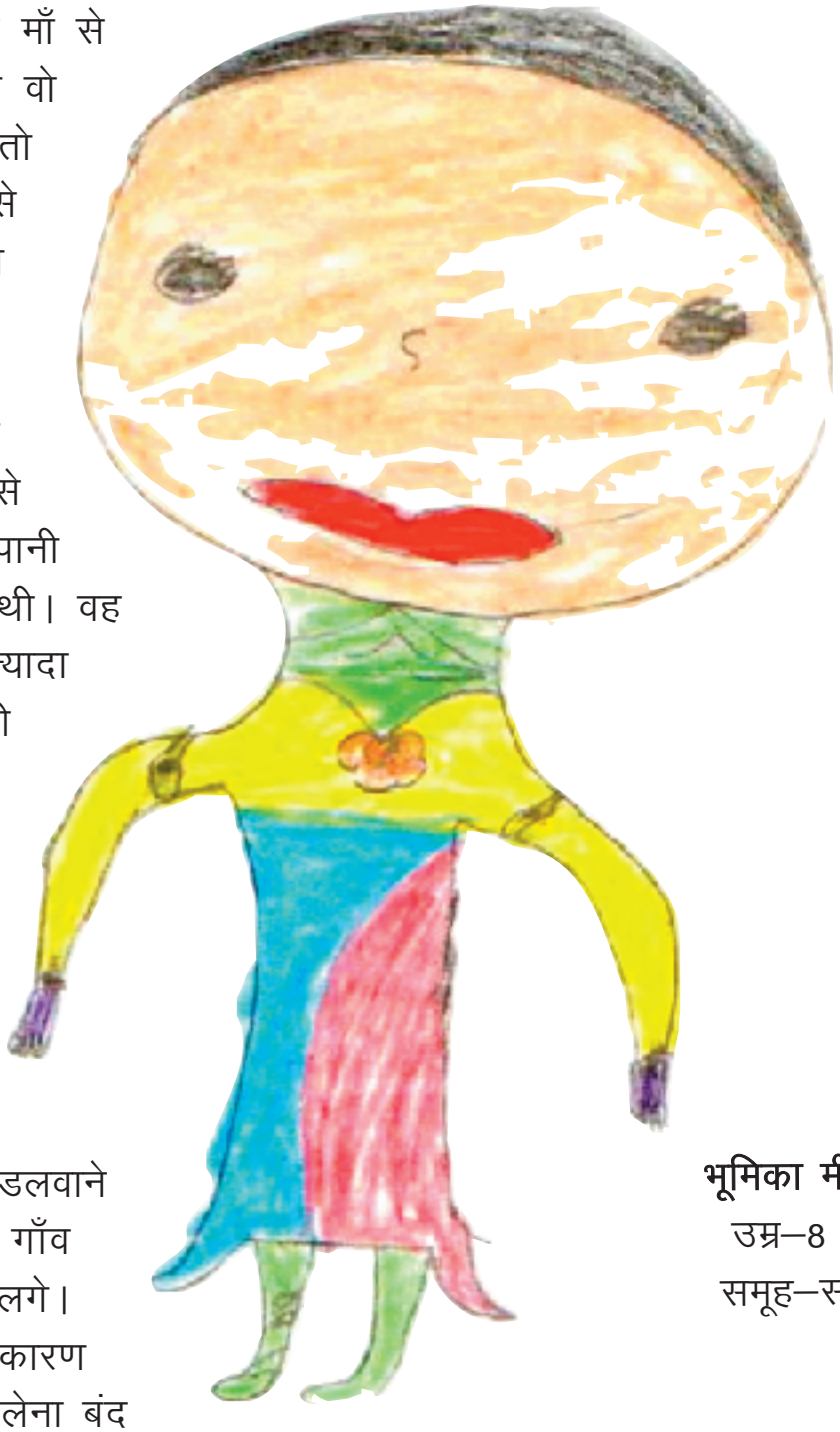

भूमिका मीना,
उम्र–8 वर्ष,
समूह–संगम

दिन प्रतिदिन उसकी माँ का लालच बढ़ता गया तो वह दूध में बहुत ज्यादा पानी डलवाने लगी। इसके कारण गाँव के लोग बीमार पड़ने लगे। बीमार पड़ने के कारण लोगों ने उनका दूध लेना बंद कर दिया जिसके कारण उनका दूध कम बिकने लगा। फिर छोटी बेटी ने अपनी माँ से कहा कि लोग हमारे दूध को नहीं खरीद रहे हैं। क्योंकि वे हमारे दूध में मिल रहे ज्यादा पानी से बीमार होने लगे है। जब उसकी माँ को इस बात का पता चला कि लोग उनका दूध नहीं खरीद रहे हैं तो उसे बहुत दुःख हुआ और उसने निर्णय किया कि वह अब से दूध में पानी नहीं मिलवायेगी।

मीनाक्षी बैरवा, उम्र–13 वर्ष, समूह–हरियाली

दो तितलियाँ

निकिता मीना, उम्र–11 वर्ष,
उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

एक बार दो तितलियाँ थी। वे दोनों बहनें थी। एक का नाम लल्ली दूसरी का नाम मुन्नी था। दोनों सुबह जल्दी घर से चली जाती थी। वे बाग बगीचों में खेलती और रस पीकर शाम को घर आ जाती थी।

एक दिन वे सुबह घर से निकल गई और बगीचों में खेलते, गाते उनको शाम हो गई जब वे घर को वापस आई तो उनको रात हो गई थी। उनका घर एक बड़ा फूल था जो अब बंद हो गया था। सर्दी भी बहुत तेज पड़ रही थी। उनको बाहर सर्दी लग रही थी। उनके घर के पास एक चूहे का बिल था। वह चूहा आधी रात तक भी नहीं सोता था। वह नाचता, गाता और मस्त रहता था। उसे दूसरों के सोने की कोई चिन्ता नहीं थी। इस कारण तितलियाँ उससे परेशान रहती थी। मगर वे तितलियों उसे डांटती थी और कहती थी कि तुम ये गाने मत गाया करों और ना ही तुम अच्छा नाचते हैं। तुम्हारी वजह से हम सो नहीं पाती हैं।

उस दिन भी लल्ली और मुन्नी दोनों बहने परेशान थी। एक तरफ वह अपने घर में नहीं जा पा रही थी तो दूसरा चूहा तेज आवाज में गा व नाचकर उन्हें परेशान कर रहा था। वे बार–बार चूहे को मना कर रही थी पर चूहा नहीं मान रहा था। चूहे ने सोचा क्यों ना इन तितलियों को घर में बुला लूं और उनसे गाना व नाच करवाऊ।

चूहे ने ऐसा ही किया और तितलियों ने उसकी बात मान ली और नाचना गाना शुरू कर दिया। चूहे ने देखा कि ये तितलियाँ गाना गाने के साथ–साथ अच्छा नाच भी रही हैं। चूहे ने उनसे माफी मांगी और कहा मुझे तुम नाचना और गाना सीखा दो। तितलियों ने उसकी बात मान ली और हाँ कर दी। अब वे खुशी–खुशी साथ–साथ रहने लगे।

दीपिका मीना, उम्र–10 वर्ष, समूह–सितारा

एक होनहार बालक

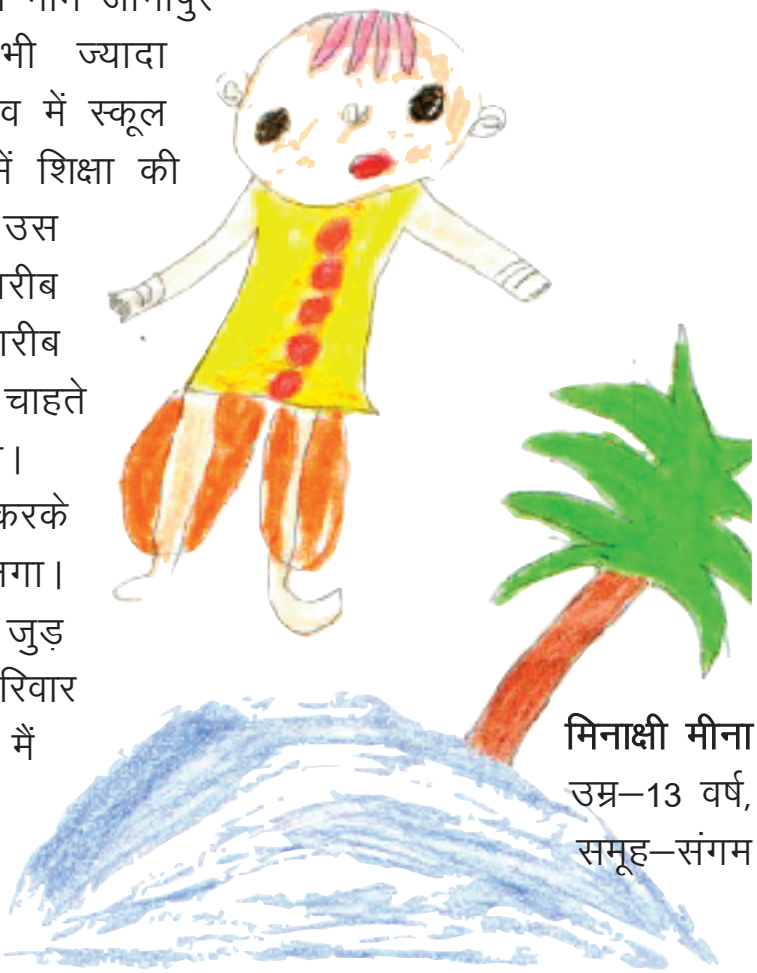

मिनाक्षी मीना
उम्र–13 वर्ष,
समूह–संगम

एक गाँव था। उस गाँव का नाम जीनापुर था। उस गाँव में कोई भी ज्यादा पढ़ा–लिखा नहीं था। उस गाँव में स्कूल नहीं खुला हुआ था। लोगों में शिक्षा की जागरूकता का अभाव था। उस गाँव में रामू नाम का एक गरीब लड़का था। उसका परिवार गरीब था। घर वाले उसे पढ़ाना नहीं चाहते थे लेकिन वह पढ़ना चाहता था।

रामू घर वालों से जिद करके पास के गाँव में पढ़ने जाने लगा। उसके साथ अन्य साथी भी जुड़ गये। वह बचपन में ही अपने परिवार और यार दोस्तों से कहता था। मैं पढ़कर कलेक्टर बनूंगा।

वह अपने दोस्तों की मदद करता था। वह कक्षा में सबसे होश्यिार बालक था। शिक्षक भी उसकी हमेशा प्रशंसा करते थे। कक्षा में प्रथम श्रेणी से वह पास होता था। घर वाले उसको आगे पढ़ाना नहीं चाहते थे लेकिन शिक्षकों ने उसके घरवालों को समझाया। उसकी पढ़ाई निरन्तर चलती रही। वह घर पर रोज पढ़ता था।

उसने पूरी शिक्षा प्राप्त करके आई.ए.एस. की परीक्षा पास की। उसके बाद उसकी कलेक्टर के पद पर नियुक्ति हो गई। वह उस गाँव का पहला होनहार बालक था जिसने गाँव में ज्ञान की रौशनी फैलाई।

उसने सबसे पहले अपने गाँव में स्कूल खुलवाया और गरीब बालकों की मदद करने लगा। गाँव वाले उसे बड़े ही आदर के साथ सम्मान देने लगे। उसकी प्रशंसा आस–पास के गाँवों में होने लगी। उसको देखकर अन्य बालक भी शिक्षा से जुड़ गये।

दिलखुश बैरवा, समूह–हरियाली, उम्र–14 वर्ष

गलगल तौरिया

एक दिन मै सुबह घर से पढ़ने के लिए सेंटर पर आ रहा था। शुष्क मौसम था। ठंडी हवा चल रही थी। आस–पास रास्ते में घास पर ओस की बूंदे थी। अचानक मैंने देखा कि रास्ते के बगल मे जाल पर एक बैल छाई हुई है। बैल इतनी घनी छाई हुई थी कि बहुत कठिनाई के बाद दूसरी ओर देख सकते थे। मैंने उसको पास जाकर देखा तो उसमें पीले व सफेद फूल खिल रहे थे। उसमें अंगुली की मोटाई और लम्बाई के बराबर एक फल आया हुआ था। वह फल बहुत ही मनमोहक था। मुझे इस बैल के बारे में जानने की उत्सुकता हुई। मैंने उसको तोड़कर बैग में रख लिया और एक बड़ा फल भी आ रहा था। वह लगभग छोटे से 4–5 गुना बड़ा था उसको भी मैंने तोड़कर बैग में रख लिया। उनको मैं घर ले आया।

घर पर मैंने मेरी भाभी व मम्मी से पूछा कि, ''यह क्या है? इसका क्या उपयोग है? यह किस काम आता? क्या ये सभी जगह पर पाये जाते हैं?'' मेरी भाभी ने बताया कि, ''यह गलगल तौरिया है। इसकी सब्जी बनती है। इसकी सब्जी बहुत स्वादिष्ट होती है। जब यह बड़ी हो जाती है तो उनको सुखाकर इसके ऊपर के मुँह को काटकर इसके बीज निकालकर इसे खोखला करके व सफाई करके इसमें पानी भी भर सकते हैं। इसमें पानी बहुत ठण्डा रहता है। यह आस–पास की खाली जमीनों, खेतों, में उगकर पेड़ों, खम्बो, दीवारों, जालियों पर चढ़ जाती हैं।''

दूसरे दिन जब मैं पढ़ने के लिए आ रहा था तब मैंने सोचा क्यों न इसकी सब्जी बनाई जाए। मैंने छोटी–छोटी गलगल तौरिया तोड़कर थेले में रख ली। जब मैं पढ़कर वापस घर गया तो मैंने भाभी से कहा कि आज मैं गलगल तोरियाँ लाया हूँ आज इनकी सब्जी बनायेंगे। हम सब ने जब शाम को सब्जी खाई तो वह बहुत ही स्वादिष्ट लगी। सब अपनी अंगुलियाँ चाटते ही रह गये। अब हर साल बरसात आने के बाद गलगल तौरिया आने लग जाती हैं और हम उसकी सब्जी बनाते हैं।

आपको बता दें गलगल तौरिया को देश में और भी नामों से जाना जाता है। जैसे – तुरिया, तोरी, घिसोडा, बुरकई, रामतोरई, नेनुआ। तोरई दो प्रकार की होती है एक सब्जी के रूप में स्तेमाल की जाने वाली और दूसरी औषधि के लिए। इसमें विटामिन सी., कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, फाईबर के साथ फोलेट, पोटेशियम और विटामिन ए की महत्वपूर्ण मात्रा होती है। इसका वैज्ञानिक नाम लूफा एकटेंगुला है। जो कुकुरबिटेसी परिवार से आता है।

रिंकू मीना, कक्षा–8, उम्र–13 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

जोड़–तोड़

लक्ष्मी का गणित

सागर बैरवा, कक्षा–5, उच्च प्राथमिक विद्यालय मेईखुर्द

मनोज हर दिन जिस मिनी बस में बैठता था, उसी जगह से लक्ष्मी भी बस में बैठती थी। आमतौर पर वे एक ही बस में बैठा करते थे। मगर कभी–कभार दूसरी में भी बैठ जाते थे।

उन दिनों उनके बस स्टॉप से सिविल लाइंस तक का किराया 4 रूपये लगता था। मगर लक्ष्मी कंडक्टर को 3 रूपये ही थमाती थी। इस बात को लेकर उसकी रोज कंडक्टर से बहस होती थी। मगर उसने एक रूपया कम देने का जैसे नियम बना ही लिया था।कभी कभार कोई बदतमीज कंडक्टर मिलता, तो लक्ष्मी को बस से उतार देता था। वह पैदल आ जाती थी पर एक रूपया नहीं देती थी।लक्ष्मी मनोज के ही महकमें के किसी दूसरे सैक्शन में चपरासी थी। एक साल पहले ही अपने पति की जबह पर उसकी नौकरी लगी थी।

लक्ष्मी का पति शंकर मनोज के महकमें में ड्राइवर था। सालभर पहले वह एक हादसे में गुजर गया था। लक्ष्मी की उम्र महज 25 साल थी। मगर उसके 3 बच्चे थे। 2 लड़के और एक लड़की। एक दिन मनोज पूछ ही बैठा, ''लक्ष्मी, तुम रोज एक रूपये के लिए कंडक्टर से झगड़ती हो, क्या करोगी एक रूपया बचा कर?''

''अपनी बेटी की शारी करूंगी'' लक्ष्मी ने कहा।

''एक रूपये में शादी करोगी?'' मनोज हैरान था।

''बाबूजी, यों देखने में यह एक रूपया लगता है, मगर रोजाना आने जाने के बचते हैं 2 रूपये, महिने के हुए 60 रूपये और सालभर के हुए 730 रूपये, 10 साल के 7 हजार 3 सौ रूपये तथा बीस साल के 14 हजार 6 सौ रूपये हुए।''

''5 सौ रूपये इकट्ठे होते ही मैं किसान विकास पत्र खरीद लेती हूँ। साढ़े 8

साल बाद उसके दोगुने पैसे हो जाते है। 20 साल बाद शादी करूंगी, तब तक 40–50 हजार रूपये तो हो ही जायेंगे।''

मनोज उसका गणित जान कर हैरान था। उसने तो इस तरह कभी सोचा ही नहीं था। भले ही गलत तरीके से सही मगर पैसा तो बच ही रहा था।

लक्ष्मी का पति शराब पीने का आदी था। दिनभर नशे में रहता था। यह शराब उसे ले डूबी थी। जब वह मरा तो घर मे गरीबी का आलम था और कर्ज देने वालों की लाईन। अगर लक्ष्मी को नौकरी नहीं मिलती, तो उसके मासूम बच्चों का भूखा मर जाना तय था। पैसे की तंगी और जिंदगी की जद्दोपेहद ने लक्ष्मी को इतनी सी उम्र में ही कम खर्चीली और समझदार बना दिया था।

एक दिन लक्ष्मी ने न जाने कहाँ से सुन लिया कि 10वीं पास करने के बद वह क्लर्क बन सकती है। बस वह पड़ गई मनोज के पीछे, ''बाबूजी, मुझे कैसे भी करके 10वीं पास करनी है। आप मुझे पढ़ा लिखा कर 10वीं पास करवा दो।''

वह हर रोज शाम या सुबह होते ही मनोज के घर आ जाती और उसकी पत्नी या बेटा–बेटी में से जो भी मिलता, उसी से पढ़ने लग जाती। कभी–कभार मनोज को भी उसे झेलना पड़ता था।

मनोज के बेटा–बेटी लक्ष्मी को देखते ही इधर–उधर छिप जाते। मगर वह उन्हें ढूंढ निकालती थी। 8वीं जमात तक तो पहले ही पढ़ी हुई थी। पढ़ने लिखने में भी ठीक ठाक थी। लिहाजा उसने गिरते पड़ते 2–3 सालों में 10वीं पास कर ही ली।

कुछ साल बाद मनोज रिटायर हो गया। तब तक लक्ष्मी को लोवर डिविजनल क्लर्क के रूप में नौकरी मिल गई थी। उसने किसी कॉलोनी में खुद का मकान ले लिया था। धीरे–धीरे पूरे 20 साल गुजर गये।

एक दिन अचानक लक्ष्मी मनोज के घर आ धमकी। उसने मनोज और उसकी पत्नी के पैर छुए। वह उसे पहचान ही नहीं पाया था। लक्ष्मी ने चहकते हुए बताया, ''बाबूजी, मैंने अपनी बेटी की शादी कर दी है। दामादजी बैंक में बाबू हैं, बेटी भी बहुत खुश है। मेरे बड़े बेटे राजू को सरकारी नौकरी मिल गई है। छोटा महेश अभी पढ़ रहा है। वह पढ़ने में बहुत तेज है। देर सवेर उसे भी नौकरी मिल ही जायेगी।''

''क्या तुम अब भी कंडक्टर को एक रूपया कम देती हो, लक्ष्मी?'' मनोज ने पूछा।

''नहीं बाबूजी, अब पूरे पैसे देती हूँ ...'' लक्ष्मी ने हंसते हुए बताया। ''अब तो कंडक्टर भी बस से नहीं उतारता, बल्कि मैडम कह कर बुलाता है।'' थोड़ी देर के बाद लक्ष्मी चली गई। मगर मनोज का मन बहुत देर तक इस हिम्मती औरत को शाबाशी देने का होता रहा।

स्त्रोत – सरस सलिल पत्रिका

कोमल बैरवा, उम्र–10 वर्ष, समूह–सूरज

घाटे की खेती

जब हमने बैंगन की खेती करने की सोची तो हम सबसे पहले बाजार गये। हम बाजार से अच्छे वाले बीज लेकर आये। बीज बोने से पहले हमने खेत की मिट्टी को बुआई के लिए तैयार किया। फिर बीजों को बोकर पौध तैयार की।

खेत को जुतवाकर क्यारी तैयार की। फिर उसमें पानी भरकर एक दिन के लिए छोड़ दिया। दूसरे दिन उसमें 1 फीट की दूरी पर पौध लगा दी जाती है। फिर उसको 15 दिन के लिए छोड़ देते हैं। जंगली जानवरों से पौध की रखवाली करते है। इसके लिए बाड़ भी करनी होती है। क्यारी में घास होने पर निराई–गुड़ाई का काम भी लगातार चलता रहता है।

अच्छी फसल और पैदावार बढ़ाने के लिए उसमें यूरिया खाद भी डाला जाता है। अब तक दूसरे पानी का समय हो जाता है तो दूबारा उसमें पानी दिया जाता है। पौधे की वृद्धि के लिए मोनो दवाई दी जाती है। दीमक लगने पर रिजेंल्ट खाद का उपयोग भी करते हैं। किसी प्रकार का रोग लगने पर जैसे कट का मायरा आदि रोग लगने पर सेगासस दवाई दी जाती है। फिर एक महीने से तीन महिने तक उसमें बैंगन आने लग जाते हैं।

इस प्रक्रिया में 20000/– रूपये एक बीघा का खर्चा किसान को बैठ जाता है। और उसको जब बैचने का समय आता है तो फसल के दाम गिर जाते हैं। इसलिए एक बीघा में लगभग 5000/– रूपये की ही पैदावार होती है। अच्छे दाम मिलने की उम्मीद में किसान हर बार मजबूर होकर बैंक से लोन लेता है और खेती करता जाता है। फसल का दाम नहीं मिलने पर वह उस लोन को चुका नहीं पाता है। इसलिए वह सरकार से मांग करता है कि हमारा लोन माफ करो या हमारी फसलों के दाम तयः कर उचित कीमत दिलवाए। बैंगन खाने से व्यक्ति के शरीर में आयरन की पूर्ति होती है।

बिंतोषी गुर्जर, शिक्षिका, आंगनबाड़ी केन्द्र फरिया

कलाकारी

अपना काम

देवेन्द्र सैनी, उम्र–9 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

चिटियल नाम के गाँव में दयाल नाम का एक बुढ़ा आदमी रहता था। एक दिन उसका बेटा कुमार पढ़ाई खत्म करके घर आया।

''काका मेरी पढ़ाई खत्म हो गई और मुझे शहर में एक नौकरी भी मिल गई। महिने का 12000 रूपये मिलेगा। पर शहर में नौकरी करने का मेरा मन नहीं है। इतने पैसे तो मैं अपने दिमाग का स्तेमाल करके यहीं अपने गाँव में ही कमा लूंगा। अपने बुढ़े मॉ–बाप को छोड़कर शहर में रहना मुझे पसंद नहीं है।'' कुमार ने कहा।

''इतनी अच्छी नौकरी छोड़कर कहीं गलती तो नहीं कर रहे हो? थोड़ा सोच लो। हमारे लिए अपनी जिंदगी मत खराब करो। सही रास्ता तुम खुद ही ढूंढ लो।'' माँ ने जवाब दिया।

कुमार सोचने लगा कि क्या किया जाये? एक दिन उसे एक तरकीब सूझी। जो उसे सूझा था वह उसने एक पर्चे पर छपवाकर पूरे गाँव में बंटवा दिया। कुछ पर्चे दीवारों पर भी चिपका दिये। उस पर लिखा था। आपको कहाँ से कौनसा खाना चाहिए। हम आपके घर तक पहुंचा देंगे। आपके गाँव का कुमार सेवक। हमारा फोन न. 919024882308 है। अब कुमार अपने फोन को पकड़कर इन्तजार करने लगा कि कोई फोन आ जाए। भाग्यवश उसके फोन पर घंटी बजी। दूसरी तरफ से आवाज आई, ''कुमार सेवक जी मुझे ना 2 गठरी घाँस की चाहिए।'' घाँस की बात सुनकर कुमार सकपका गया और बोला, '' आपको घाँस चाहिए?''

''आपने तो कहा था। खाना पहुंचाओगे। घाँस तो मेरी भैंसों का खाना है ना। क्यों, नहीं पहुँचाऊंगे?'' दूसरी तरफ से आवाज आई।

''सॉरी सर, बुरा मत मानियेगा। आपका पता बता दीजिए। कुछ ही देर में घाँस पहुँचा दूंगा।'' फिर क्या था। साईकिल पर घाँस बांधकर कुमार सेवक ने उस आदमी के घर पर घास पहुँचा दिया और उनसे पैसे ले लिये। दूसरे दिन एक महिला ने फोन करके कहा, ''हैलो, कुमार सेवक जी, हमें हमारे घोड़ों के लिए दाना चाहिए। मेरे पति गाँव से बाहर हैं। 2 बस्ते दाना ला सकते हो?''

कुमार ने कहा, ''आपका पता बता दीजिए। कुछ ही देर में दाना पहुँचा दूंगा।'' कुमार अपनी साईकिल पर 2 बस्ते दाना बांधकर उसके घर पहुँच गया और उनसे

प्रियंका मीना, उम्र–10 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

पैसे भी ले लिए। घर से बाहर आकर सोचने लगा। ''इन गाँव वालों ने मेरी बात को इस तरह से समझा। चलो इसी तरह ही सही। मुझे पैसे तो मिल ही रहे है ना, और क्या चाहिए।''

फिर एक दिन नया आर्डर मिला। ''हैलो, मुझे राजु भाई का बिरयानी चाहिए। पता लिख लिजिए।'' कहकर पता लिखवा दिया। फोन रखकर कुमार खुशी से बोला, अरे वाह! कितने दिनों बाद इन्सानों के खाने का आर्डर मिला है। उस दिन के बाद से खाना, घास, सब्जियां, दूध जिसका भी आर्डर मिलता कुमार पता लेकर उनके घर तक पहुँचा देता। एक बार फिर फोन में से एक आदमी ने कहा, ''बेटा, मुझे अर्जेंटली दवाईयाँ चाहिए। जितनी जल्दी हो सके मेरे घर तक पहुँचा दो। दवाईयों के नाम लिखवा देता हूँ। जरा लिख लोगे बेटा।'' तुरंत दवाईयों के नाम और पता लिखकर कुमार दवाईयों की दुकान पर गया और बिना देर किये दवाईयों को लेकर फोन करने वाले आदमी के घर पहुँचा। वहाँ उसने एक बूढ़े पति–पत्नी को देखा। दवाईयां देकर कुमार ने पूंछा, ''आप दोंनों अकेले रहते हैं? आपके बच्चे सब कहां हैं?''

''अब तुम्हें अपनी कहानी क्या बताऊ बेटा। हमारे दोनों बच्चे अमेरिका में रहते हैं। गाँव के कई और बच्चे भी वहाँ पर हैं। कभी–कभी उनका फोन आ भी जाता है। पर इसमें उनकी कोई गलती नहीं। बेचारों ने कई बार हमें ले जाने की कोशिश की। पर हम तो यहीं पर पैदा हुए थे। कहीं और जाने का मन ही नहीं होता। मरने के बाद हम इसी मिट्टी में मिल जाना चाहते हैं।'' बूढ़े पति–पत्नी ने कहा।

दूसरे दिन कुमार को एक और आईडिया आया। फिर उसने अमेरिका में रहने वाले सभी लोगों का पता जमा किया और उन सबको चिठ्टी में लिख भेजा – ''आपके घर वालों की देखभाल के बारे में बिलकुल चिंता मत कीजिए। मैं तीनों वक्त उनको पौष्टिक आहार पहुँचा दिया करूंगा और दवाईयां भी वक्त पर पहुँचा दूंगा। उनकी तस्वीरें और विड़ियो भी हर हफ्ते भेजा करूंगा। यदि आपको मेरी सेवा चाहिए तो मुझे फोन कीजिएगा। इस गाँव का कुमार सेवक।''

उस दिन के बाद से तो कुमार का फोन बजता ही रहा।

इस तरह अधेड़ उम्र के लोगों को खाना, दवाईयाँ, डॉक्टर को दिखाना ये सब कुमार करने लगा। अपनी कमाई से उसने एक नया स्कूटर खरीद लिया और अपने व माता–पिता के लिए नया घर भी बनवा लिया। कुमार ने गाँव में रहकर बड़ा नाम और इज्जत दोनों कमाई। इसके लिए उसने नां गाँव छोड़ा और ना अपने माता पिता को छोड़ा।

विष्णु गोपाल

तालियाँ

आरती, उम्र–12 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

एक लड़की थी। उसका नाम आरती था। वह बहुत मेहनती और दयालु थी। उसकी आयु 14 वर्ष की थी। वह स्कूल जाती थी। वह बहुत मेहनत और लगन से पढ़ाई करती और घर आकर घर का सारा काम करती। उनके स्कूल में बहुत सारे छोटे बच्चे थे। आरती सब बच्चों को एक साथ लाती और ले जाती।

इस तरह समय गुजरता गया। अब वह 16 वर्ष की हो चुकी थी। वह आगे की पढ़ाई करने के लिए सवाई माधोपुर में रहने लगी। अपने दोस्तों के साथ रहती थी। वह इतना स्वादिष्ट खाना बनाती थी कि खाने वाला अंगुलियाँ खा जाये।

एक दिन वह पढ़ने के लिए स्कूल जा रही थी। रास्ते में उसे एक वृद्धा मिली। उस वृद्धा को सड़क पार करनी थी।

आरती उनके पास गई और बोली कि क्या आपको सड़क पार करनी है?

वृद्धा बोली हाँ, बेटी।

आरती ने बिना संकोच उनकी मदद की। बदले में वृद्धा ने आरती को धन्यवाद दिया और चली गई।

आरती स्कूल पहुँची तो उसे पता चला कि एक लड़की ने उसे देख लिया था और अध्यापिका को बताया। अध्यापिका ने आरती के लिए तालियाँ बजाई। आरती बहुत खुश हुई।

काजल बैरवा, समूह–हरियाली, उम्र–13 वर्ष

जंगल में आग

भोला शंकर, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

हमारे यहाँ गाँव से कुछ दूरी पर एक माता जी का मंदिर है। यह बिल्कुल ही घने जंगल में है। यहाँ पर दूर–दूर से लोग ढोक लगाने आते हैं। एक बार हम भी माताजी के गये। हम रास्ते में रूकते–रूकते गये। हमने रास्ते के जंगल में जंगली जानवर भी देखे। वहाँ पर हम हँसते, मजाक करते हुए गये थे। हमने माता जी के जाकर दर्शन किये, थोड़ा आराम किया। थोड़ी देर बाद हमने देखा कि वहाँ पर सूखी घास में आग लग गई है। आग देखकर हम घबरा गये। धीरे–धीरे आग बढ़ने लगी और जंगल के बहुत सारे ईलाके में फैल गई। घास जल चुका था फिर किसी ने चौकी वालों के पास फोन किया। कुछ देर बाद वहाँ पर पुलिस भी आ चुकी थी। पुलिस वालों ने और कुछ लोगों ने मिलकर आग को बुझाने के प्रयास किये। धीरे–धीरे आग कम होती गई। पुलिस वालों ने आग बुझाने के पश्चात माताजी के मंदिर में दर्शन किये और प्रसाद ग्रहण किया। फिर वे हमसे बातचीत करने लगे। आग बुझने के बाद हमने भी एक पेड़ की छाया मैं बेठकर खाना खाया। लेकिन पहाड़ पर थोड़ी–थोड़ी आग थी। पर पुलिस वाले अभी वहाँ से गये नहीं थे। हमारा वहाँ से आने का समय हो गया था। हम वहाँ से चल पड़े परन्तु हमें फिर भी डर लगा हुआ था। क्योंकि कई जगह ऐसी थी जहाँ पर ज्यादा आग लगी हुई थी। परन्तु वहाँ पर पुलिस घूम रही थी। पुलिस वालों ने हमसे पूछा कि तुम्हारे गाँव का क्या नाम है तो हमने हमारे गाँव का नाम बताया दिया और ऐसे बातचीत करते–करते हम गाँव आ गये। हमें वहाँ पर बहुत आनन्द आया। पर जंगल की आग ने जंगल को बडा नुकसान पहुँचाया। हम बहुत थक चुके थे। हमने घर आकर आराम किया।

विशाल सैनी, उम्र–12 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

आकाश मीना, उिम्र 12 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

डरपोक बाघ

एक बार की बात है। एक राजा था। वह बहुत बड़े महल में रहता था। उस महल में राजा के अलावा बहुत सारे महिला, पुरूष व बच्चे भी रहते थे। महल के चारों और सुरक्षा के लिए सिपाही खड़े रहते थे। सारे मंत्री महल के अंदर ही रहते थे। उस राजा के चार बेटे थे।

चारों ही बेटे एक साथ किसी दूसरे स्थान पर पढ़ने के लिए रहते थे। बहुत दिन हुए तो उन्हें अपने राजा पिता की याद आई और वे चारों अपने पिता के पास मिलने के लिए आ गये। फिर उनके पिता ने कहा कि कितने दिन हुए तुम चारों से मिले। तुमको क्या मेरी याद नहीं आती थी। चारों बेटों ने कहा पिताजी, हमें आपकी बहुत याद आती थी। मगर हमें स्कूल से छुट्टी नहीं मिलती थी। हमें अब जाकर छुट्टी मिली है तो अब हम आ गये। फिर उन्होंने साथ मिलकर खाना खाया और वे सो गये।

दूसरे दिन चारों जंगल में घूमने के लिए गये तो वहाँ उन्होंने देखा कि सारा जंगल सूना पड़ा है। उन्हें जंगल में घूमते–घूमते रात हो गई। फिर वे घर को लौटने लगे तो रास्ते में उन्हें एक बाघ मिला। उन्होंने अंधेरे में सोचा कि यह तो घोड़ा है। यह हमें जल्दी महल पहुँचा देगा। तो चारों उसके ऊपर बैठ गये। बाघ जोर से दहाड़ कर भागा।

बाघ भागता–भागता दूसरे जंगल में पहुँच गया वहाँ रास्ते में एक पेड़ आया। चारों उस पेड़ की लटकती चोटी को पकड़कर पेड़ पर चढ़ गये और बाघ दौड़ता हुआ आगे निकल गया। बाघ एक भालू के पास जाकर रूका।

भालू ने पूछा, ''हे जंगल के राजा तुम किससे इतना डरकर भाग रहे हो?'' बाघ

ने कहा कि बड़ के ऊपर चार भूत बैठे हैं। वे मेरी पीठ पर बैठ गये थे। जिसके कारण मैं उनसे बचने के लिए भागा। भालू ने कहा चलो मेरे साथ। कोई भूत–वूत नहीं। वे दोनों उस बड के पेड़ के पास चले गये तो उन्हें रात होने के कारण कुछ भी दिखाई नहीं दिया। भालू पेड़ के ऊपर चढ़ गया तो एक व्यक्ति ने भालू के जोर से लट्ठ की दे मारी। जिसके कारण वह पेड़ से नीचे गिर गया। फिर भालू और बाघ दोनों भूत–भूत चिल्लाते भागे। भागते–भागते उन्हें रास्ते में एक सियार मिला।

मनीष सैनी
उम्र–12 वर्ष,
समूह–सितारा

सियार ने पूछा, ''क्या बात है? आप दोनों इतना डर कर कहाँ भागे जा रहे हों?'' तो भालू ने उसे सारी बात बताई। सियार ने कहा, डरों नहीं मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। मेरे पास दैवीय शक्ति हैं जिससे उन भूतों को पकड़ लूंगा। फिर वे तीनों उसी पेड़ के नीचे आ गये और सियार उन भूतों को पकड़ने के लिए पेड़ पर चढ गया। जैसे ही वह आधे पेड़ तक चढ़ा एक व्यक्ति ने तलवार से उस सियार की पूछ काट दी। सियार भी धड़ाम से नीचे गिरा और चिल्लाता हुआ भागने लगा। फिर भालू और बाघ भी उसके साथ–साथ भागे। फिर उन्हें रास्ते में एक लोमड़ी मिली।

लोमड़ी ने पूछा, ''क्या बात है? आप तीनों इतना डर कर कहाँ भागे जा रहे हों?'' उन्होंने लोमड़ी को भी सारी बातें बताई। लोमड़ी ने कहा कि मैं बहुत छोटी जानवर हूँ। उन्हें रात में नहीं दिखूंगी। चलों मैं तुम्हारे साथ चलती हूँ। लोमड़ी ने उनसे कहा कि हम चारों मिलकर उनसे मुकाबला करेंगे इसलिए हम चारों आपस में अपनी पूंछे बांध लेते हैं। ताकि पेड़ से गिरेंगे नहीं। फिर वे चारों आपस में पूंछ बांधकर पेड़ पर चढ़ने लगे। एक व्यक्ति में पेड़ की डालों को जोर–जोर से हिलाया तो दूसरे व्यक्ति ने दूसरी तरफ से जोर–जोर से डरावनी आवाजें निकाली और तीसरे व्यक्ति ने तीसरी तरफ से आवाजे निकाली। तो वे चारों डर गये। डर के मारे बाघ और भालू दोनों भागने लगे। उनकी पूछ से बंधे होने के कारण सियार और लोमड़ी भी उनके साथ घिसटते गये। जिसके कारण सियार और लोमड़ी दोनों मर गये। फिर वह बाघ और भालू जंगल से बहुत दूर चले गये। दूसरे दिन सुबह होने पर वे चारों पेड़ से उतर कर अपने महल में वापस आ गये।

गोविन्द नायक, समूह–सूरज, उम्र–14 वर्ष

माथापच्ची

राधा मीना, उम्र 11 वर्ष,
उदय सामुदायिक
पाठशाला जगनपुरा

1. दो बैलों की जोड़ी लेकर, खेती करना उसका काम, जाड़ा, गर्मी, वर्षा सहता, कभी न करता वह आराम।
2. सिर पर टोपी एक लगाये, कंधे पर थैला लटकाये, खाकी वर्दी में मुस्काता, मनीआर्डर, चिट्ठी लाता।
3. हंसिया, कांटा, तवा बनाता, जो भी लोहा लेकर आता, लिये हथोड़ा करता काम बोलो बच्चों उसका नाम।
4. काली हूँ पर कोयल नहीं, लम्बी हूँ पर डंडी नहीं, डोर नहीं पर बांधी जाती, भैया मेरा नाम बताती।

दिलखुश, पवन, नीरज, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

हीहीही ठीठीठी

1. एक तोता एक बार कार से टकरा गया तो कार वाले ने उसे उठाया और पिजरें में डाल दिया। दूसरे दिन जब तोते को होश आया, तो वह बोला, ''आईला, जेल! यानि कार वाला मर गया क्या?
2. छोटा बच्चा अपना रिजल्ट लेकर घर आया और पिता से बोला, ''पापा आप बहुत किस्मत वाले हैं।

पिता ने पूछा, ''कैसे बेटा?''

बच्चा – ''मैं फेल हो गया हूँ। अब आपको मेरे लिए नई किताबें नहीं खरीदनी पड़ेंगी।''

जगदीश कोली, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

एक था भालू
एक था चालू...

महेन्द्र गुर्जर, उम्र–8 वर्ष, समूह–गिरिराजपुरा द्वारा शुरू की गई इस कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजें।

चंद्रमुखी सैनी, उम्र–9 वर्ष, समूह–सितारा

एक बार एक बंदर के पीछे कुत्ता पड़ गया। वह बंदर उछल कूद करता हुआ भाग रहा था। फिर उस बंदर को एक पेड़ दिखा तो वह बंदर उस पेड़ पर चढ़ गया। .....

अमित सैनी, उम्र–11 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजें।

सपना नायक, कक्षा–4, उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

पलक मीना, उम्र–8 वर्ष, समूह–संगम

पहेलियों के ज़वाब –

1. किसान
2. पोस्टमैन
3. लुहार
4. चोटी

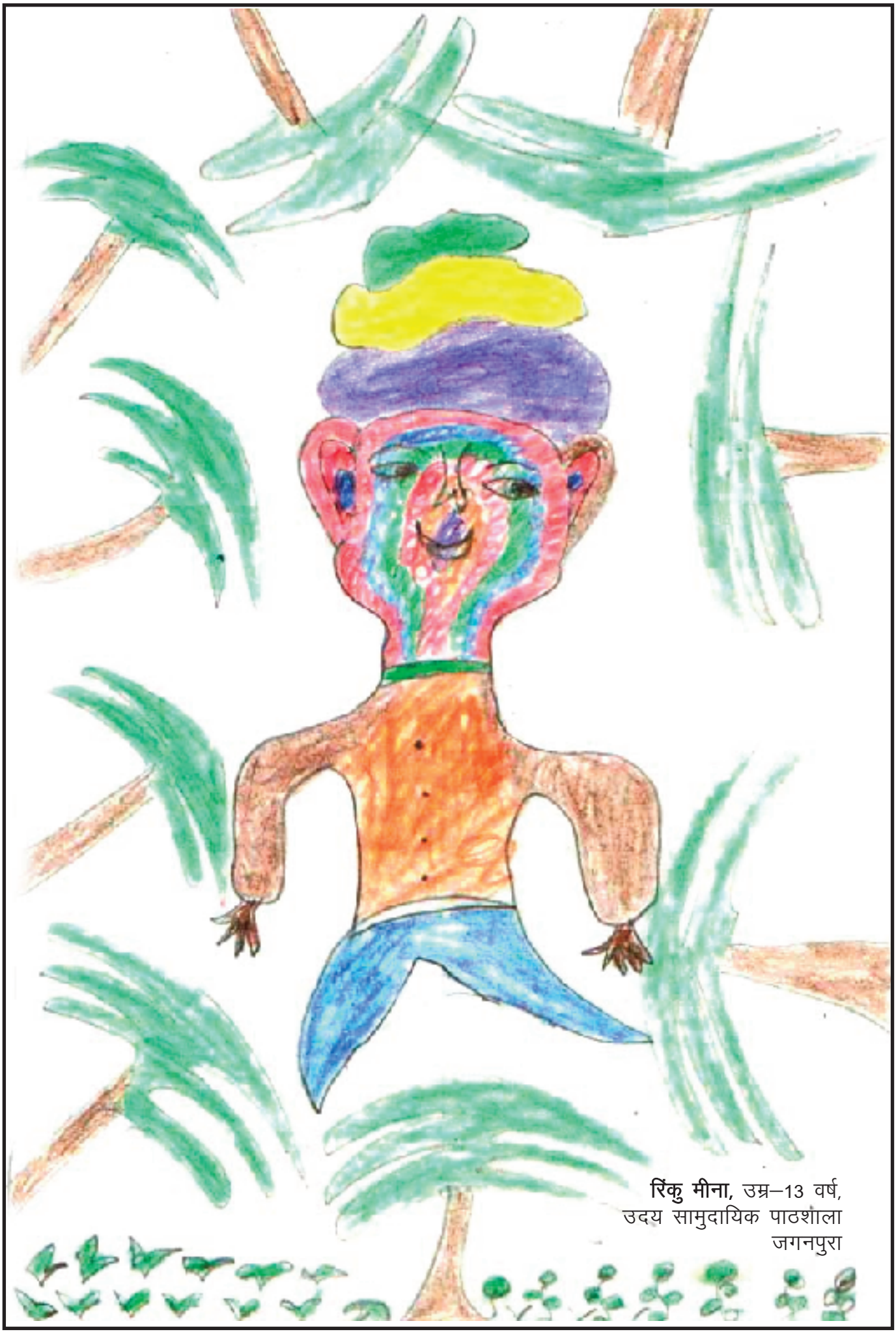

रिंकु मीना, उम्र–13 वर्ष,
उदय सामुदायिक पाठशाला
जगनपुरा